International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 7 No. 2 January – February - 2026

दलित जीवन की दास्तां 'नरक कुंड में बास'

डॉ. स्वाति सुधाकर ठुबे

सहकार महर्षि भाऊसाहेब संतुजी थोरात महाविद्यालय, संगमनेर (महाराष्ट्र), जिला -अहिल्यानगर

Corresponding Author – डॉ. स्वाति सुधाकर ठुबे

DOI - 10.5281/zenodo.19755983

"सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं।
मेरी कोशिश है कि यह सूरत बदलनी चाहिए।
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही।
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।"

उक्ति के अनुसार, जगदीश चंद्र ने बहुजन समाज की दु:खांतिका को एक सूक्ष्म चितेरे की तरह मूर्तिमान किया है। साठोत्तरी हिंदी कथा साहित्य के क्षितिज पर जगदीश चंद्र एक यथार्थवादी, संवेदनशील और लोक चेतना से संलग्न उपन्यासकार के रूप में सुप्रतिष्ठित है। वे एक अनुभव संपन्न, सृजनशील और सुलझे हुए कथाकार है। अपने युग की आवाज सुनकर उस आवाज और उस में निहित वेदना को लिपिबद्ध करने वाले एक सिद्ध हस्त रचनाकार है।

'नरक कुंड में बास'यह रचना 'धरती धन न अपना' का दूसरा भाग है तीसरा भाग है 'जमीन अपनी तो थी' जो लेखक के मरणोपरांत प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास त्रयी का पहला भाग अर्थात 'धरती धन न अपना' में लेखक ने पंजाब के एक छोटे से गांव को केंद्र में रखकर एक ऐसे महाकाव्य की रचना की थी कि जिसमें ग्रामीण जीवन का कोई पक्ष उसमें अछूता नहीं रहा था। उपन्यास के अंत में उसका केंद्रीय पात्र 'काली' अनेक भीतरी बाहरी दबावों के तहत गांव छोड़ देने के लिए विवश हो जाता है और इसी बिंदु से प्रारंभ होती है 'नरक कुंड में बास' की कथा 'काली' अपने गांव से भाग कर शहर पहुंचता है, जहां काली की तरह गांव से भागे हुए अनगिनत लोग अपना भाग्य आजमा रहे हैं। अपना गांव छोड़ते समय इन लोगों के मन में अनेक रंगीन सपने होते हैं, लेकिन शहर एक ऐसी जगह का नाम है जो तमाम बेघर लोगों के सपनों को अपनी झोली में समेट कर जिंदगी की लड़ाई में उन्हें निहत्था छोड़ देती है और इस प्रकार अपने परिवार से दूर रहकर वे जिस यातना से गुजरते हैं और अपने अस्तित्व के रक्षा के लिए उन्हें जो संघर्ष करना पड़ता है उसी का मार्मिक आख्यान है यह 'नरक कुंड में बास' जो एक प्रकार से आजादी के बाद घटित आर्थिक, सामाजिक बदलावों का औपन्यासिक दस्तावेज है।

काली अपनी जमा पूंजी के साथ शहर में काम के तलाश में दर-दर की ठोकरें खाने वाला नवयुवक है जो कभी मालगोदाम में, कभी बस अड्डे पर, तो कभी बर्फ की सिल्लियों के बीच फंसा हुआ नजर आता है और इसी सिलसिले में चमड़ा साफ करने की मजदूरी में रुबरु होता है।काली के लिए चमड़ा धोने वाली हौज मानो एक नरक कुंड है। पशु का मानिंद जुतकर (रेढ़ा) खींचना भी उसके लिए त्रासद अनुभव है। "मेरे पास गांव में एक खेत होता तो मैं शहर में रेढ़ा न खींचता।"1 लेकिन कुछ दिनों के बाद यह

काम भी जाता है। वह बेरोजगार हो जाता है। मजदूर जितना श्रम करता है उतनी उसे मजदूरी नहीं मिलती। शोषण की समस्या इस उपन्यास का में मुख्य रूप से उबर कर आई है। काली गांव से जालंधर शहर पहुंचकर हताशा का अनुभव कर आत्महत्या करने की कोशिश करता है, परंतु असफल रहता है। लुधियाना बस में पहुंचकर अपने जीवन का निर्वाह प्रारंभ करता है,वह बरकत के आगे गिड़गिड़ाता है,परंतु बरकत उसे करता है कि तुझे यहां तो मजदूरी नहीं मिल सकती, वर्क के कारखाने,गोदाम, मंडी मजदूर में मजदूरी मिल सकती है।वहां बैठे हुए काली को एक कर्मचारी आकर कहता है, तुम्हें मैनेजर साहब का हुक्म नहीं सुनाई दिया जो अभी तक समाधि लगाए बैठा है। तब काली कहता है- “चला जाता हूं। पेट खाली हो तो टांगों में भी ताकत नहीं होती।टांगे खड़ी नहीं होती तो सड़क पर जाकर लेट जा, सारी उम्र के लिए ताकत आ जाएगी।”2 मंडी में भीतरी और बाहरी मजदूरी की लड़ाई को होते देख काली सोचता है- “शहर कितना विशाल होकर भी कितना संकीर्ण है, बुरी तरह बंटा हुआ है, इनका बस चले तो अपने-अपने इलाके की धूप,हवा और पानी भी अलग-अलग बांट लें।”3

मजदूरी की तलाश में भटकते-भटकते काली फेन्टन गंज मंडी पहुंचता है, वहां उसकी मुलाकात कालू नामक व्यक्ति से होती है,जो छब्बू व मांझा के साथ मिलकर रेढ़ा खींचता है। काली को छब्बू कहता है- “हम तो पशुओं का काम करते हैं, बोझा ढोते हैं। अगर यह काम कर सकते हो तो दो-चार दिन के लिए सोचा जा सकता है।”4 चमड़े के कारखाने में नौकरी के लिए काली तैयार हो जाता है। चमड़ा धोने वाली हौज मानो नरक का कुंड है। काली को अपनी जिंदगी एक नरक के समान लगती है। रेढा खींचने तथा मरे हुए पशुओं के चमड़े को उतारना उनकी सफाई काली को नरक कुंड की ओर धकेलती है। इस प्रकार एक नरक से निकलकर दूसरे नरक में जाना काली की नियति जो ‘नरक कुंड में बास’ शीर्षक को पूर्ण सार्थकता प्रदान करती है। चमड़े के कारखाने की दयनीय स्थिति का वर्णन जब वह मांझे से करता है, तब मांझा कहता है कि- “हम लोगों की जन्म से मरण तक सारी जिंदगी ही इसी जिंदगी में गुजरती है। रुके हुए सडान्ध भरे पानी में मच्छर मक्खियों की तरह हम भी चलते हैं। चार दिन भी-भी करके मर-खप जाते हैं।”5

काली चमड़े के कारखाने में देखता है कि यहां पर सब मजदूर छप्पड़ के पानी से नहाते हैं जो पानी जहर से बुरा है। इस पानी के नहाने से इनकार करते हुए काली कहता है- “जिस छप्पड़ में पशु नहीं नहाते,पानी को मुंह तक नहीं लगाते,कुत्ते झांककर भी नहीं देखते, पक्षी नहीं पक्षी नहीं मंडराते,कीड़े- मकोड़े नहीं सरसराते, जिसकी तह में कुछ भी नहीं उगता वह पानी जहर से भी बुरा है।”6 इस उपन्यास में ‘वर्ग- संघर्ष’ की झलक मिलती है। उपन्यास में लेखक ने बताया कि चमड़े के कारखाने के मालिक मजदूरों का शोषण करते हैं। इसका प्रमुख कारण है, उनकी अज्ञानता और अशिक्षा। इसी कारण मलिक वर्ग मजदूरों का शोषण करके अधिक से अधिक संपत्ति एकत्रित करना चाहते हैं। इन शोषित मजदूरों को अपने अधिकारों का इतना भी ज्ञान नहीं है कि अपनी उचित मांगों को मालिक तक पहुंच सके। विवेच्य उपन्यास में कारखाने का मालिक एक लाला है, किंतु कारखाने का सारा कारोबार फोरमैन संभालता है। लाला फोरमैन की मदद से काली और काली जैसे अन्य मजदूरों का शोषण करते हैं। वे मजदूरों का क़र्ज़ दिए बिना ही कर्जनामे में उनके दस्तखत ले लेते हैं। ताकि न तो वे तनख्वाह बढ़ाने की मांग कर सके और न कहीं अन्यत्र जा सके। उपन्यास में एक पात्र मालिकों की शोषण वृत्ति को व्यक्त करता है-”काम सिख भी जाओ तो मालिक पूरी मजदूरी नहीं देता।कभी कच्चे काम का बहाना और कभी गंदे की शिकायत। ये रोना-पीटना लगा ही रहता है।”7

चमड़े के कारखाने में पशुपत काम करने वाले मजदूर गंभीर रोग के शिकार होते तब कारखाने के मालिक उनका शोषण करके कारखाने से निकाल देते हैं इस समस्या पर नजू कहता है- “ठीक से बैठ नहीं जाता तो काम धंधा कैसे करूंगा। कारखाने ने तो मुझे नींबू की तरह निचोड़ के कूड़े के ढेर पर फेंक दिया है।”8 जगदीश चंद्र ने दलित शोषित मजदूर किरपू के माध्यम से शोषकों के इस षड्यंत्र का पर्दाफाश किया है- “साले सब बहुत बड़े का पाखंडी है। गुरु के तिपाए और रंडी पर तो हजारों रुपए खर्च कर देंगे लेकिन उसी बिरादरी की गरीब मजदूर को बीमारी का इलाज कराने के लिए रुपए भी पेशगी नहीं देंगे।”9यही कारण है के मालिक न तो उनकी सहूलियत, मांगो और अधिकारों के प्रति चिंतित हैं और न हीं उन्हें मेहनत के मुआवने में वेतन देते हैं।किरपू की यह मजदूरी भारतवर्ष के उन तमाम दलित-शोषित-पीड़ित मजदूरों की मजबूरी है।काली कारखाने में दूसरे मजदूरों को शोषण के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा देता है- “यही कि हमें सहूलते मिले। काम बहुत गंदा है। इसलिए हमें ज्यादा मजदूरी मिले।”10 काली सभी मजदूरों को एक करके “हमें कुछ सहूलते मिलनी चाहिए। काम बहुत गंदा है।पा ॅ और खाज -खुजली जैसी मोहलक बीमारियां लग जाती है,जो बाद में बिगड़कर कोढ़ बन सकती है और न सही, जो सरकार ने सहूलते कानूनी तौर पर मंजूर की है वह तो मिलनी ही चाहिए।”11 इसी कारण मलिक वर्ग को यह डर रहता है कि मजदूर विद्रोह न कर दे।

चमड़े के कारखाने का फोरमैन डरता है मजदूर अपने अधिकारों के लिए बायकट न कर दे। यथा “फोरमैन ने सोचा कि शायद कारखाने में भी उसी बदलाव की प्रतिक्रिया हो रही है उसके बायकाट की तैयारी हो रही है।”12 काली सभी मजदूरों को अपनी अधिकारों के प्रति सचेत करता हैं और मांगे पूर्ण न हो तो हड़ताल का भी संकेत करता है। यथा “दूसरी बात यह है कि अगर सेठ ने हमारी मांगे मानने से इनकार कर दिया तो हम अगली कारवाई क्या करेंगे। यहां काम करना बंद कर देंगे.....या।”13 किंतु उपन्यास में उभरने वाला यह वर्ग संघर्ष परिणाम तक पहुंचने से पहले ही समाप्त हो जाता है। इसका कारण मजदूर खुद बंधे हुए थे। वे मालिक वर्ग के सामने आवाज नहीं उठा सकते हैं, क्योंकि मालिकों ने उनके पास से कोरे कागज पर अंगूठें की छाप ले ली होती है।

काली वहां के वातावरण से तंग आकर विद्रोह की आवाज उठाता है और कहता है कि मुंशी से कहकर एक नल लगवा दे ताकि साफ व ताजा पानी से नहा सके। कारीगर बंसा कहता है कोई फायदा नहीं। एक बार इंस्पेक्टर आया था, कह रहा था कि मजदूरों के लिए सरकार ने कही कानून बनाए हैं। पर कुछ भी हमें नहीं मिला। बंसा कहता है,यह सब किताबों में है, “कहते हैं देश आजाद हो गया लेकिन लगता है कि आजादी सेठों, अफसरों और बड़े-बड़े चौधरियों की कोठियों और हवेलियों में ही फॅसकर रह गई है। उसे छोटी-छोटी गलियों और कच्चे मकानों का रास्ता नहीं मिला।”14 उपन्यासकार यहां बताना चाहता है कि शहरी जीवन गांव से आए हुए बेघर लोगों के लिए नरक है, जहां न उन्हें अच्छे रहने को घर मिल पाता है न खाने को दाना।उनकी हालत बद से बदत्तर होती चली जाती है। “गरीब आदमी के लिए बेहतर जिंदगी का सपना देखना भी पाप होता है। कितनी बड़ी कीमत मांगी जाती है, एक छोटी सी मामूली रुवाहिस के लिए।”15 उपन्यासकार ने दलित उत्पीड़ित लोगों के प्रति सहानुभूति प्रकट की है तथा जमीदार, साहूकार, धनवान, बनिया आदि पात्रों के द्वारा वे वर्ग संघर्ष एवं वर्गभेद का निर्देशन करते हैं।

डॉ. कुंवर पाल सिंह है इस उपन्यास की आलोचना करते हुए लिखते हैं- “जगदीश चंद्र के उपन्यास ‘नरक कुंड में बास’ में दलित और मजदूरो की अनेक समस्याएं अपने यथार्थ रूप से उभरकर सामने आयी हैं ।शहरों में रोजगार की

तलाश में आने वाले व्यक्तियों को निराशा ही हाथ लगती है। इस बेरोजगारी और मजबूरी का लाभ पूंजीपति वर्ग अधिक से अधिक उठता है। शहर में ऐसी बेरोजगारी के कारण उन्हें पशु की जगह पर काम करना पड़ता है जो नि:संदेह मानव जीवन के लिए, हमारी व्यवस्था के लिए घातक है।.... पूंजीपति वर्ग अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए इस दलित-पीड़ितश्रमिक वर्ग का उपयोग करते हैं।यह श्रमिक वर्ग जो की तमाम समस्याओं से ग्रस्त है अपने अधिकारों को नहीं मांग सकता क्योंकि यह तो उसके अधिकार पूजिपतियों के पास गिरवी है या विपरीत परिस्थितियों के शिकार। इससे छुटकारे का कोई उपाय नहीं है। आवश्यकता है मुक्ति और पहचान के लिए छटपटाहट और गहरी इच्छा शक्ति की। यही इच्छा शक्ति चेतना का पुंज बनकर नया मार्ग प्रशस्त करेगी।"16

'नरक कुड में बास' उपन्यास में ग्रामीण समस्या के कारण शहर में निकले हुए दलितों की शहरी समस्या का मार्मिक चित्रण हुआ है। अनजानी अपरिचित शहर की भूमि में सिर छिपाने लायक आश्रय खोजने के साथ ही इन दलितों की शहरी समस्या का आरंभ हो जाता है। रेढ़ा खींचना , चमड़े के कारखाने में काम करना, मरे हुए पशुओं की बदबू और चर्बी में लथ-पथ कच्ची खालों को धोना, भीड़ी बनना,बस अड्डे पर मजदूरी करना आदि काम शहर में करना पड़ता है। इतनी मेहनत के बाद भी दोपहर के भोजन में रुखी- सूखी रोटी से कम चलाते हैं। दिन भर थकान दूर करने के लिए अफ़ीम की गोलियां खाते हैं है। जो उनका शौक नहीं मजबूरी है।बस यह ही दलितों की शहरी जीवन की समस्या है।ऊपर्युक्त उपन्यास के विवेचन से स्पष्ट होता है कि उपन्यासकार जगदीश चंद्र ने ग्रामीण समस्या के साथ-साथ शहरी जीवन की समस्या की वास्तविक पहचान की है।

सन्दर्भ:

1. जगदीश चंद्र, रचनावली खंड -1,पृ.384
2. जगदीश चंद्र, नरक कुंड में बास,पृ.64
3. सं.विनोद नाही, जगदीश चंद्र रचनावली खंड पृ.353
4. वही पृ.358
5. वही पृ.128-129
6. वही पृ.424
7. जगदीश चंद्र, नरक कुंड में बास,पृ.208
8. वही पृ.179
9. सं.विनोद शाही, जगदीश चंद्र रचनावली खंड, पृ.50
10. वही पृ.434
11. वही पृ.483
12. वही पृ.501
13. वही पृ.489
14. वही पृ.423
15. वही पृ.576
16. कुंवरपाल सिंह, अजय सिसकारियां, हिंदी उपन्यास जनवादी परंपरा,पृ.19